

Philippians

फिलिप्पियों

1 Greetings from Paul and Timothy, servants of Jesus Christ. To all of you in Philippi who are God's holy people in Christ Jesus, including your elders and special servants.

² Grace and peace to you from God our Father and the Lord Jesus Christ.

Paul's Prayer

³ I thank God every time I remember you. ⁴ And I always pray for all of you with joy. ⁵ I thank God for the help you gave me while I told people the Good News. You helped from the first day you believed until now. ⁶ I am sure that the good work God began in you will continue until he completes it on the day when Jesus Christ comes again.

⁷ I know I am right to think like this about all of you because you are so close to my heart. This is because you have all played such an important part in God's grace to me—now, during this time that I am in prison, and whenever I am defending and proving the truth of the Good News. ⁸ God knows that I want very much to see you. I love all of you with the love of Christ Jesus.

⁹ This is my prayer for you:

that your love will grow more and more;
that you will have knowledge
and understanding with your love;

¹⁰ that you will see the difference between
what is important and what is not and
choose what is important;

that you will be pure and blameless
for the coming of Christ;

¹¹ that your life will be full of the many
good works that are produced by

Jesus Christ to bring glory and praise to God.

Paul's Troubles Help the Lord's Work

¹² Brothers and sisters, I want you to know that all that has happened to me has helped to spread the Good News. ¹³ All the Roman guards

1 यीशु मसीह के सेवक पौलुस और तिमुथियुस की ओर से मसीह यीशु में स्थित फिलिप्पी के रहने वाले सभी संत जनों के नाम जो वहाँ निरीक्षकों और कलीसिया के सेवकों के साथ निवास करते हैं:

हमारे परम पिता परमेश्वर और हमारे प्रभु यीशु मसीह की ओर से तुम्हें अनुग्रह और शान्ति प्राप्त हो।

पौलुस की प्रार्थना

³ मैं जब जब तुम्हें याद करता हूँ, तब तब परमेश्वर को धन्यवाद देता हूँ। ⁴ अपनी हर प्रार्थना में मैं सदा प्रसन्नता के साथ तुम्हारे लिये प्रार्थना करता हूँ। ⁵ क्योंकि पहले ही दिन से आज तक तुम सुसमाचार के प्रचार में मेरे सहयोगी रहे हो। ⁶ मुझे इस बात का पूरा भरोसा है कि वह परमेश्वर जिसने तुम्हारे बीच ऐसा उत्तम कार्य प्रारम्भ किया है, वही उसे उसी दिन तक बनाए रखेगा, जब मसीह यीशु फिर आकर उसे पूरा करेगा।

⁷ तुम सब के विषय में मेरे लिये ऐसा सोचना ठीक ही है। क्योंकि तुम सब मेरे मन में बसे हुए हो। और न केवल तब, जब मैं जेल में हूँ, बल्कि तब भी जब मैं सुसमाचार के सत्य की रक्षा करते हुए, उसकी प्रतिष्ठा में लगा था, तुम सब इस विशेषाधिकार में मेरे साथ अनुग्रह में सहभागी रहे हो। ⁸ परमेश्वर मेरा साक्षी है कि मसीह यीशु द्वारा प्रकट प्रेम से मैं तुम सब के लिये व्याकुल रहता हूँ।

⁹ मैं यही प्रार्थना करता रहता हूँ:
तुम्हारा प्रेम गहन दृष्टि और
ज्ञान के साथ निरन्तर बढ़े।

¹⁰ ये गुण पाकर भले बुरे में अन्तर करके,
सदा भले को अपना लोते।

और इस तरह तुम पवित्र अकलूष बन
जाओगे उस दिन को जब मसीह आयेगा।

¹¹ यीशु मसीह की करुणा को पा कर
तुम अति उत्तम काम करोगे जो प्रभु को
महिमा देते हैं और उसकी स्तुति बनते।

पौलुस की विपत्तियाँ प्रभु के कार्य में सहायक

¹² हे भाईयों, मैं तुम्हें जना देना चाहता हूँ कि मेरे साथ जो कुछ हुआ है, उससे सुसमाचार को बढ़ावा ही मिला है। ¹³ परिणामस्वरूप संसार के समूचे

and all the others here know that I am in prison for serving Christ. ¹⁴My being in prison has caused most of the believers to put their trust in the Lord and to show more courage in telling people God's message.

¹⁵Some people are telling the message about Christ because they are jealous and bitter. Others do it because they want to help. ¹⁶They are doing it out of love. They know that God gave me the work of defending the Good News. ¹⁷But those others tell about Christ because of their selfish ambition. Their reason for doing it is wrong. They only do it because they think it will make trouble for me in prison. ¹⁸But that doesn't matter. What is important is that they are telling people about Christ, whether they are sincere or not. So I am glad they are doing it.

I will continue to be glad, ¹⁹because I know that your prayers and the help the Spirit of Jesus Christ gives me will cause this trouble to result in my freedom. ²⁰I am full of hope and feel sure I will not have any reason to be ashamed. I am certain I will continue to have the same boldness to speak freely that I always have. I will let God use my life to bring more honor to Christ. It doesn't matter whether I live or die. ²¹To me, the only important thing about living is Christ. And even death would be for my benefit. ²²If I continue living here on earth, I will be able to work for the Lord. But what would I choose—to live or to die? I don't know. ²³It would be a hard choice. Sometimes I want to leave this life and be with Christ. That would be much better for me; ²⁴however, you people need me here alive. ²⁵I am sure of this, so I know that I will stay here and be with you to help you grow and have joy in your faith. ²⁶When I am there with you again, you will be bursting with pride over what Christ Jesus did to help me.

²⁷Just be sure you live as God's people in a way that honors the Good News of Christ. Then if I

सुरक्षा दल तथा अन्य सभी लोगों को यह पता चल गया है कि मुझे मसीह का अनुयायी होने के कारण ही बंदी बनाया गया है। ¹⁴इसके अतिरिक्त प्रभु में स्थित अधिकतर भाई मेरे बंदी होने के कारण उत्साहित हुए हैं और अधिकाधिक साहस के साथ सुसमाचार को निर्भयतापूर्वक सुना रहे हैं।

¹⁵यह सत्य है कि उनमें से कुछ ईर्ष्या और बैर के कारण मसीह का उपदेश देते हैं किन्तु दूसरे लोग सदभावना से प्रेरित होकर मसीह का उपदेश देते हैं। ¹⁶ये लोग प्रेम के कारण ऐसा करते हैं क्योंकि ये जानते हैं कि परमेश्वर ने सुसमाचार का बचाव करने के लिए ही मुझे यहाँ रखा है। ¹⁷किन्तु कुछ और लोग तो सचाई के साथ नहीं, बल्कि स्वार्थ पूर्ण इच्छा से मसीह का प्रचार करते हैं क्योंकि वे सोचते हैं कि इससे वे बंदीगृह में मेरे लिए कष्ट पैदा कर सकेंगे। ¹⁸किन्तु इससे कोई अंतर नहीं पड़ता। महत्वपूर्ण तो यह है कि एक ढंग से या दूसरे ढंग से, चाहे बुरा उद्देश्य हो, चाहे भला प्रचार तो मसीह का ही होता है और इससे मुझे आनन्द मिलता है और आनन्द मिलता ही रहेगा।

¹⁹क्योंकि मैं जानता हूँ कि तुम्हारी प्रार्थनाओं के द्वारा और उस सहायता से जो यीशु मसीह की आत्मा से प्राप्त होती है, परिणाम में मेरी रिहाई ही होगी। ²⁰मेरी तीव्र इच्छा और आशा यही है और मुझे इसका विश्वास है कि मैं किसी भी बात से निराश नहीं होऊँगा बल्कि पूर्ण निर्भयता के साथ जैसे मेरे देह से मसीह की महिमा सदा होती रही है, वैसे ही आगे भी होती रहेगी, चाहे मैं जीऊँ और चाहे मर जाऊँ। ²¹क्योंकि मेरे जीवन का अर्थ है मसीह और मृत्यु का अर्थ है एक उपलब्धि। ²²किन्तु यदि मैं अपने इस शरीर से जीवित ही रहूँ तो इसका अर्थ यह होगा कि मैं अपने कर्म के परिणाम का आनन्द लूँ। सो मैं नहीं जानता कि मैं क्या चुनूँ। ²³दोनों विकल्पों के बीच चुनाव में मुझे कठिनाई हो रही है। मैं अपने जीवन से विदा होकर मसीह के पास जाना चाहता हूँ क्योंकि वह अति उत्तम होगा। ²⁴किन्तु इस शरीर के साथ ही मेरा यहाँ रहना तुम्हारे लिये अधिक आवश्यक है। ²⁵और क्योंकि यह मैं निश्चय के साथ जानता हूँ कि मैं यही रहूँगा और तुम सब की आध्यात्मिक उन्नति और विश्वास से उत्पन्न आनन्द के लिये तुम्हारे साथ रहता ही रहूँगा। ²⁶ताकि तुम्हारे पास मेरे लौट आने के परिणामस्वरूप तुम्हें मसीह यीशु में स्थित मुझ पर गर्व करने का और अधिक आधार मिल जाय।

²⁷किन्तु हर प्रकार से ऐसा करो कि तुम्हारा आचरण मसीह के सुसमाचार के अनुकूल रहे।

come and visit you or if I am away from you, I will hear good things about you. I will know that you stand together with the same purpose and that you work together like a team to help others believe the Good News.²⁸ And you will not be afraid of those who are against you. All of this is proof from God that you are being saved and that your enemies will be lost.²⁹ God has blessed you in ways that serve Christ. He allowed you to believe in Christ. But that is not all. He has also given you the honor of suffering for Christ. Both of these bring glory to Christ.³⁰ You saw the difficulties I had to face, and you hear that I am still having troubles. Now you must face them too.

Be United and Care for Each Other

2 Think about what we have in Christ: the encouragement he has brought us, the comfort of his love, our sharing in his Spirit, and the mercy and kindness he has shown us. If you enjoy these blessings,² then do what will make my joy complete: Agree with each other, and show your love for each other. Be united in your goals and in the way you think.³ In whatever you do, don't let selfishness or pride be your guide. Be humble, and honor others more than yourselves.⁴ Don't be interested only in your own life, but care about the lives of others too.

Learn From Christ to Be Unselfish

⁵ In your life together, think the way Christ Jesus thought.

- ⁶ He was like God in every way, but he did not think that his being equal with God was something to use for his own benefit.
- ⁷ Instead, he gave up everything, even his place with God. He accepted the role of a servant, appearing in human form. During his life as a man,
- ⁸ he humbled himself by being fully obedient to God, even when that caused

जिससे चाहे मैं तुम्हारे पास आकर तुम्हें देखूँ और चाहे तुमसे दूर रहूँ, तुम्हारे बारे में यही सुनूँ कि तुम एक ही आत्मा में दृढ़ता के साथ स्थिर हो और सुसमाचार से उत्पन्न विश्वास के लिए एक जुट होकर संघर्ष कर रहे हो।²⁸ तथा मैं यह भी सुनना चाहता हूँ कि तुम अपने विरोधियों से किसी प्रकार भी नहीं डर रहे हो। तुम्हारा यह साहस उनके विनाश का प्रमाण है और यही प्रमाण है तुम्हारी मुक्ति का और परमेश्वर की ओर से ऐसा ही किया जायेगा।²⁹ क्योंकि मसीह की ओर से तुम्हें न केवल उसमें विश्वास करने का बल्कि उसके लिए यातनाएँ झेलने का भी विशेषाधिकार दिया गया है।³⁰ तुम जानते हो कि तुम उसी संघर्ष में जुटे हो, जिसमें मैं जुटा था और जैसा कि तुम सुनते हो आज तक मैं उसी में लगा हूँ।

एकतापूर्वक एक दूसरे का ध्यान रखो

2 फिर तुम लोगों में यदि मसीह में कोई उत्साह है, प्रेम से पैदा हुई कोई सांत्वना है, यदि आत्मा में कोई भागेदारी है, स्नेह की कोई भावना और सहानुभूति है² तो मुझे पूरी तरह प्रसन्न करो। मैं चाहता हूँ, तुम एक तरह से सोचो, परस्पर एक जैसा प्रेम करो, आत्मा में एका रखो और एक जैसा ही लक्ष्य रखो।³ ईश्याँ और बेकार के अहंकार से कुछ मत करो। बल्कि नम्र बनो तथा दूसरों को अपने से उत्तम समझो।⁴ तुममें से हर एक को चाहिए कि केवल अपना ही नहीं, बल्कि दूसरों के हित का भी ध्यान रखे।

यीशु से निःस्वार्थ होना सीखो

⁵ अपना चिंतन ठीक वैसा ही रखो जैसा मसीह यीशु का था।

- ⁶ जो अपने स्वरूप में यद्यपि साक्षात् परमेश्वर था, किन्तु उसने परमेश्वर के साथ अपनी इस समानता को कभी ऐसे महाकोष के समान नहीं समझा जिससे वह चिपका ही रहे।
- ⁷ बल्कि उसने तो अपना सब कुछ त्याग कर एक सेवक का रूप ग्रहण कर लिया और मनुष्य के समान बन गया। और जब वह अपने बाहरी रूप में मनुष्य जैसा बन गया
- ⁸ तो उसने अपने आप को दीन किया। और इतना आज्ञाकारी बन गया कि

- his death—death on a cross.
- ⁹ So God raised him up to the most important place and gave him the name that is greater than any other name.
- ¹⁰ God did this so that every person will bow down to honor the name of Jesus. Everyone in heaven, on earth, and under the earth will bow.
- ¹¹ They will all confess, “Jesus Christ is Lord,” and this will bring glory to God the Father.

Be the People God Wants You to Be

¹² My dear friends, you always obeyed what you were taught. Just as you obeyed when I was with you, it is even more important for you to obey now that I am not there. So you must continue to live in a way that gives meaning to your salvation. Do this with fear and respect for God.

¹³ Yes, it is God who is working in you. He helps you want to do what pleases him, and he gives you the power to do it.

¹⁴ Do everything without complaining or arguing ¹⁵so that you will be blameless and pure, children of God without any fault. But you are living with evil people all around you, who have lost their sense of what is right. Among those people you shine like lights in a dark world, ¹⁶and you offer them the teaching that gives life. So I can be proud of you when Christ comes again. You will show that my work was not wasted—that I ran in the race and won.

¹⁷ Your faith makes you give your lives as a sacrifice in serving God. Maybe I will have to offer my own life with your sacrifice. But if that happens, I will be glad, and I will share my joy with all of you. ¹⁸You also should be glad and share your joy with me.

News About Timothy and Epaphroditus

¹⁹ With the blessing of the Lord Jesus, I hope I will be able to send Timothy to you soon. I will be glad to learn how you are. ²⁰I have no one else like Timothy, who genuinely cares for you.

अपने प्राण तक न्योछावर कर दिये और वह भी क्रूस पर।

- ⁹ इसलिए परमेश्वर ने भी उसे ऊँचे से ऊँचे स्थान पर उठाया और उसे वह नाम दिया जो सब नामों के ऊपर है
- ¹⁰ ताकि सब कोई जब यीशु के नाम का उच्चारण होते हुए सुनें, तो नीचे झुक जायें। चाहे वे स्वर्ग के हों, धरती पर के हों और चाहे धरती के नीचे के हों।
- ¹¹ और हर जीभ परम पिता परमेश्वर की महिमा के लिये स्वीकार करें, “यीशु मसीह ही प्रभु है।”

परमेश्वर की इच्छा के अनुरूप बनो

¹²इसलिए मेरे प्रियों, तुम मेरे निर्देशों का जैसा उस समय पालन किया करते थे जब मैं तुम्हारे साथ था, अब जबकि मैं तुम्हारे साथ नहीं हूँ तब तुम और अधिक लगन से उनका पालन करो। परमेश्वर के प्रति सम्पूर्ण आदर भाव के साथ अपने उद्धार को पूरा करने के लिये तुम लोग काम करते जाओ। ¹³क्योंकि वह परमेश्वर ही है जो उन कामों की इच्छा और उन्हें पूरा करने का कर्म, जो परमेश्वर को भाते हैं, तुम में पैदा करता है।

¹⁴बिना कोई शिकायत या लड़ाई झगड़ा किये सब काम करते रहो, ¹⁵ताकि तुम भोले भाले और पवित्र बन जाओ। तथा इस कुटिल और पथभ्रष्ट पीढ़ी के लोगों के बीच परमेश्वर के निष्कलंक बालक बन जाओ। उन के बीच अंधेरी दुनिया में तुम उस समय तारे बन कर चमको ¹⁶जब तुम उन्हें जीवनदायी सुसंदेश सुनाते हो। तुम ऐसा ही करते रहो ताकि मसीह के फिर से लौटने के दिन मैं यह देख कर कि मेरे जीवन की भाग दौड़ बेकार नहीं गयी, तुम पर गर्व कर सकूँ।

¹⁷तुम्हारा विश्वास एक बलि के रूप में है और यदि मेरा लहू तुम्हारी बलि पर दाखमधु के समान उँडेल दिया भी जाये तो मुझे प्रसन्नता है। तुम्हारी प्रसन्नता में मेरा भी सहभाग है। ¹⁸उसी प्रकार तुम भी प्रसन्न रहो और मेरे साथ आनन्द मनाओ।

तीमथियुस और इपफ्रुदीतुस

¹⁹प्रभु यीशु की सहायता से मुझे तीमथियुस को तुम्हारे पास शीघ्र ही भेज देने की आशा है ताकि तुम्हारे समाचारों से मेरा भी उत्साह बढ़ सके। ²⁰क्योंकि दूसरा कोई ऐसा व्यक्ति नहीं है जिसकी भावनाएँ मेरे जैसी हों और जो तुम्हारे कल्याण के

²¹ Others are interested only in their own lives. They don't care about the work of Christ Jesus.

²² You know the kind of person Timothy is. He has served with me in telling the Good News like a son with his father. ²³ I plan to send him to you quickly, as soon as I know what will happen to me. ²⁴ I am sure the Lord will help me come to you soon.

²⁵ For now, I think I must send Epaphroditus back to you. He is my brother in God's family, who works and serves with me in the Lord's army. When I needed help, you sent him to me, ²⁶ but now he wants very much to see all of you again. He is worried because you heard that he was sick. ²⁷ He was sick and near death. But God helped him and me too, so that I would not have even more grief. ²⁸ So I want very much to send him to you. When you see him, you can be happy. And I can stop worrying about you. ²⁹ Welcome him in the Lord with much joy. Give honor to people like Epaphroditus. ³⁰ He should be honored because he almost died for the work of Christ. He put his life in danger so that he could help me. This was help that you could not give me.

Christ Is More Important Than Anything

3 And now, my brothers and sisters, be filled with joy in the Lord. It is no trouble for me to write the same things to you again. I want to be sure that you are prepared.

² Be careful of the dogs—those men whose work does only harm. They want to cut on everyone who isn't circumcised. ³ But we are the ones who have the true circumcision—we who worship God through his Spirit. We don't trust in ourselves or anything we can do. We take pride only in Christ Jesus. ⁴ Even if I am able to trust in myself, still I don't do it. If anyone else thinks they have a reason to trust in themselves, they should know that I have a greater reason for doing so. ⁵ I was circumcised on the eighth day after my birth. I am

लिये सच्चे मन से चिंतित हो। ²¹ क्योंकि और सभी अपने-अपने कामों में लगे हैं। यीशु मसीह के कामों में कोई नहीं लगा है। ²² तुम उसके चरित्र को जानते हो कि सुसमाचार के प्रचार में मेरे साथ उसने कैसे ही सेवा की है, जैसे एक पुत्र अपने पिता के साथ करता है। ²³ सो मुझे जैसे ही यह पता चलेगा कि मेरे साथ क्या कुछ होने जा रहा है मैं उसे तुम्हारे पास भेज देने की आशा रखता हूँ। ²⁴ और मेरा विश्वास है कि प्रभु की सहायता से मैं भी जल्दी ही आऊँगा।

²⁵ मैं यह आवश्यक समझता हूँ कि इफ्रुदीतुस को तुम्हारे पास भेजूं जो मेरा भाई है, साथी कार्यकर्ता है और सहयोगी कर्म वीर है तथा मुझे आवश्यकता पड़ने पर मेरी सहायता के लिये तुम्हारा प्रतिनिधि रहा है, ²⁶ क्योंकि वह तुम सब के लिये व्याकुल रहा करता था और इससे बहुत खिन्न था कि तुमने यह सुना था कि वह बीमार पड़ गया था। ²⁷ हाँ, वह बीमार तो था, और वह भी इतना कि जैसे मर ही जायेगा। किन्तु परमेश्वर ने उस पर अनुग्रह किया (न केवल उस पर बल्कि मुझ पर भी) ताकि मुझे दुःख पर दुःख न मिले। ²⁸ इसीलिए मैं उसे और भी तत्परता से भेज रहा हूँ ताकि जब तुम उसे देखो तो एक बार फिर प्रसन्न हो जाओ और मेरा दुःख भी जाता रहे। ²⁹ इसलिए प्रभु में बड़ी प्रसन्नता के साथ उसका स्वागत करो और ऐसे लोगों का आधिकाधिक आदर करते रहो। ³⁰ क्योंकि मसीह के काम के लिये वह लगभग मर गया था ताकि तुम्हारे द्वारा की गयी मेरी सेवा में जो कभी रह गई थी, उसे वह पूरा कर दे, इसके लिये उसने अपने प्राणों की बाजी लगा दी।

मसीह सबके ऊपर है

3 अतः मेरे भाईयों, प्रभु में आनन्द मनाते रहो। तुम्हें फिर-फिर उन्हीं बातों को लिखते रहने से मुझे कोई कष्ट नहीं होता है और तुम्हारे लिए तो यह सुरक्षित है ही।

² इन कुत्तों से सावधान रहो जो कुकर्मों में लगे हैं। उन बुरे काम करने वालों से सावधान रहो। ³ क्योंकि सच्चे खतना युक्त व्यक्ति तो हम है जो अपनी उपासना को परमेश्वर की आत्मा द्वारा अर्पित करते हैं। और मसीह यीशु पर गर्व रखते हैं तथा जो कुछ शारीरिक है, उस पर भरोसा नहीं करते हैं। ⁴ यद्यपि मैं शरीर पर भी भरोसा कर सकता था। पर यदि कोई और ऐसे सोचे कि उसके पास शारीरिकता पर विश्वास करने का विचार है तो मेरे पास तो वह और भी अधिक है। ⁵ जब मैं आठ दिन का था, मेरा खतना कर दिया गया था। मैं

from the people of Israel and the tribe of Benjamin. I am a true Jew, and so were my parents. The law was very important to me. That is why I became a Pharisee. ⁶I was so eager to defend my religion that I persecuted the church. And no one could find fault with the way I obeyed the Law of Moses.

⁷At one time all these things were important to me. But because of Christ, I decided that they are worth nothing. ⁸Not only these things, but now I think that all things are worth nothing compared with the greatness of knowing Christ Jesus my Lord. Because of Christ, I lost all these things, and now I know that they are all worthless trash. All I want now is Christ. ⁹I want to belong to him. In Christ I am right with God, but my being right does not come from following the law. It comes from God through faith. God uses my faith in Christ to make me right with him. ¹⁰All I want is to know Christ and the power that raised him from death. I want to share in his sufferings and be like him even in his death. ¹¹Then there is hope that I myself will somehow be raised from death.

Trying to Reach the Goal

¹²I don't mean that I am exactly what God wants me to be. I have not yet reached that goal. But I continue trying to reach it and make it mine. That's what Christ Jesus wants me to do. It is the reason he made me his. ¹³Brothers and sisters, I know that I still have a long way to go. But there is one thing I do: I forget what is in the past and try as hard as I can to reach the goal before me. ¹⁴I keep running hard toward the finish line to get the prize that is mine because God has called me through Christ Jesus to life up there in heaven.

¹⁵All of us who have grown to be spiritually mature should think this way too. And if there is any of this that you don't agree with, God will make it clear to you. ¹⁶But we should continue following the truth we already have.

¹⁷Brothers and sisters, join together in following my example. Also, learn by watching

इस्राएली हैं। मैं बिन्यामीन के वंश का हूँ। मैं इब्रानी माता-पिता से पैदा हुआ एक इब्रानी हूँ। जहाँ तक व्यवस्था के विधान तक मेरी पहुँच का प्रश्न है, मैं एक फरीसी हूँ। ⁶जहाँ तक मेरी निष्ठा का प्रश्न है, मैंने कलीसिया को बहुत सताया था। जहाँ तक उस धार्मिकता का सवाल है जिसे व्यवस्था का विधान सिखाता है, मैं निर्दोष था।

⁷किन्तु तब जो मेरा लाभ था, आज उसी को मसीह के लिये मैं अपनी हानि समझाता हूँ। ⁸इससे भी बड़ी बात यह है कि मैं अपने प्रभु मसीह यीशु के ज्ञान की श्रेष्ठता के कारण आज तक सब कुछ को हीन समझाता हूँ। उसी के लिए मैंने सब कुछ का त्याग कर दिया है और मैं सब कुछ को घृणा की वस्तु समझने लगा हूँ ताकि मसीह को पा सकूँ। ⁹और उसी में पाया जा सकूँ-मेरी उस धार्मिकता के कारण नहीं जो व्यवस्था के विधान पर टिकी थी, बल्कि उस धार्मिकता के कारण जो मसीह में विश्वास के कारण मिलती है, जो परमेश्वर से मिलती है और जिसका आधार विश्वास है। ¹⁰मैं मसीह को जानना चाहता हूँ और उस शक्ति का अनुभव करना चाहता हूँ जिससे उसका पुनरुत्थान हुआ था। मैं उसकी यातनाओं का भी सहभागी होना चाहता हूँ। और उसी रूप को पा लेना चाहता हूँ जिसे उसने अपनी मृत्यु के द्वारा पाया था। ¹¹इस आशा के साथ कि मैं भी इस प्रकार मरे हुआँ में से उठ कर पुनरुत्थान को प्राप्त करूँ।

लक्ष्य पर पहुँचने की यत्न करते रहो

¹²ऐसा नहीं है कि मुझे अपनी उपलब्धि हो चुकी है अथवा मैं पूरा सिद्ध ही बन चुका हूँ। किन्तु मैं उस उपलब्धि को पा लेने के लिये निरन्तर यत्न कर रहा हूँ जिसके लिये मसीह यीशु ने मुझे अपना बर्धुआ बनाया था। ¹³हे भाइयों! मैं यह नहीं सोचता कि मैं उसे प्राप्त कर चुका हूँ। पर बात यह है कि बीती को बिसार कर जो मेरे सामने है, उस लक्ष्य तक पहुँचने के लिये मैं संघर्ष करता रहता हूँ। ¹⁴मैं उस लक्ष्य के लिये निरन्तर यत्न करता रहता हूँ कि मैं अपने उस पारितोषिक को जीत लूँ, जिसे मसीह यीशु में पाने के लिये परमेश्वर ने हमें ऊपर बुलाया है।

¹⁵ताकि उन लोगों का, जो हममें से सिद्ध पुरुष बन चुके हैं, भाव भी ऐसा ही रहे। किन्तु यदि तुम किसी बात को किसी और ही ढँग से सोचते हो तो तुम्हारे लिये उसका स्पष्टीकरण परमेश्वर कर देगा। ¹⁶जिस सत्य तक हम पहुँच चुके हैं, हमें उसी पर चलते रहना चाहिए।

¹⁷हे भाइयों, औरों के साथ मिलकर मेरा अनुकरण करो। जो उदाहरण हमने तुम्हारे सामने रखा है,

those who are living the way we showed you. ¹⁸ There are many who live like enemies of the cross of Christ. I have often told you about them. And it makes me cry to tell you about them now. ¹⁹ The way they live is leading them to destruction. They have replaced God with their own desires. They do shameful things, and they are proud of what they do. They think only about earthly things. ²⁰ But the government that rules us is in heaven. We are waiting for our Savior, the Lord Jesus Christ, to come from there. ²¹ He will change our humble bodies and make them like his own glorious body. Christ can do this by his power, with which he is able to rule everything.

Some Things to Do

4 My dear brothers and sisters, I love you and want to see you. You bring me joy and make me proud of you. Continue following the Lord as I have told you.

² Euodia and Syntyche, you both belong to the Lord, so please agree with each other. ³ For this I make a special request to my friend who has served with me so faithfully: Help these women. They worked hard with me in telling people the Good News, together with Clement and others who worked with me. Their names are written in the book of life.

⁴ Always be filled with joy in the Lord. I will say it again. Be filled with joy.

⁵ Let everyone see that you are gentle and kind. The Lord is coming soon. ⁶ Don't worry about anything, but pray and ask God for everything you need, always giving thanks for what you have. ⁷ And because you belong to Christ Jesus, God's peace will stand guard over all your thoughts and feelings. His peace can do this far better than our human minds.

⁸ Brothers and sisters, continue to think about what is good and worthy of praise. Think about what is true and honorable and right and pure and beautiful and respected. ⁹ And do what you learned and received from me—what I told you and what you saw me do. And the God who gives peace will be with you.

उसके अनुसार जो जीते हैं, उन पर ध्यान दो। ¹⁸ क्योंकि ऐसे भी बहुत से लोग हैं जो मसीह के क्रूस से शत्रुता रखते हुए जीते हैं। मैंने तुम्हें बहुत बार बताया है और अब भी मैं यह बिलख बिलख कर कह रहा हूँ। ¹⁹ उनका नाश उनकी निर्याति है। उनका पेट ही उनका ईश्वर है। और जिस पर उन्हें लजाना चाहिए, उस पर वे गर्व करते हैं। उन्हें बस भौतिक वस्तुओं की चिंता है। ²⁰ किन्तु हमारी जन्मभूमि तो स्वर्ग में है। वहीं से हम अपने उद्धारकर्ता प्रभु यीशु मसीह के आने की बाट जोह रहे हैं। ²¹ अपनी उस शक्ति के द्वारा जिससे सब वस्तुओं को वह अपने अधीन कर लेता है, हमारी दुर्बल देह को बदल कर अपनी दिव्य देह जैसा बना देगा।

फिलिपियों को पौलुस का निर्देश

4 हे मेरे प्रिय भाईयों, तुम मेरी प्रसन्नता हो, मेरे गौरव हो। तुम्हें जैसे मैंने बताया है, प्रभु में तुम वैसे ही दृढ़ बने रहो।

² मैं यहूदिया और संतुखे दोनों को प्रोत्साहित करता हूँ कि तुम प्रभु में एक जैसे विचार बनाये रखो। ³ मेरे सच्चे साथी तुझसे भी मेरा आग्रह है कि इन महिलाओं की सहायता करना। ये वलैमेन्स तथा मेरे दूसरे सहकर्मियों सहित सुसमाचार के प्रचार में मेरे साथ जुटी रही हैं। इनके नाम जीवन की पुस्तक में लिखे गये हैं।

⁴ प्रभु में सदा आनन्द मनाते रहो। इसे मैं फिर दोहराता हूँ, आनन्द मनाते रहो।

⁵ तुम्हारी सहनशील आत्मा का ज्ञान सब लोगों को हो। प्रभु पास ही है। ⁶ किसी बात कि चिंता मत करो, बल्कि हर परिस्थिति में धन्यवाद सहित प्रार्थना और विनय के साथ अपनी याचना परमेश्वर के सामने रखते जाओ। ⁷ इसी से परमेश्वर की ओर से मिलने वाली शांति, जो समझ से परे है तुम्हारे हृदय और तुम्हारी बुद्धि को मसीह यीशु में सुरक्षित बनाये रखेगी।

⁸ हे भाईयों, उन बातों का ध्यान करो जो सत्य है, जो भव्य है, जो उचित है, जो पवित्र है, जो आनन्ददायी है, जो सराहने योग्य है या कोई भी अन्य गुण या कोई प्रशंसा ⁹ जिसे तुमने मुझसे सीखा है, पाया है या सुना है या जिसे करते मुझे देखा है। उन बातों का अभ्यास करते रहो। शांति का स्रोत परमेश्वर तुम्हारे साथ रहेगा।

Paul Thanks the Philippian Believers

¹⁰ I am so happy, and I thank the Lord that you have again shown your care for me. You continued to care about me, but there was no way for you to show it. ¹¹ I am telling you this, but not because I need something. I have learned to be satisfied with what I have and with whatever happens. ¹² I know how to live when I am poor and when I have plenty. I have learned the secret of how to live through any kind of situation—when I have enough to eat or when I am hungry, when I have everything I need or when I have nothing. ¹³ Christ is the one who gives me the strength I need to do whatever I must do.

¹⁴ But it was good that you helped me when I needed help. ¹⁵ You people in Philippi remember when I first told the Good News there. When I left Macedonia, you were the only church that gave me help. ¹⁶ Several times you sent me things I needed when I was in Thessalonica. ¹⁷ Really, it is not that I want to get gifts from you. But I want you to have the benefit that comes from giving. ¹⁸ I have everything I need. I have even more than I need. I have all I need because Epaphroditus brought your gift to me. Your gift is like a sweet-smelling sacrifice offered to God. God accepts that sacrifice and it pleases him. ¹⁹ My God will use his glorious riches to give you everything you need. He will do this through Christ Jesus. ²⁰ Glory to our God and Father forever and ever. Amen.

²¹ Give our greetings to God's people there—to each one who belongs to Christ Jesus. Those in God's family who are with me send you their greetings. ²² And greetings to you from all of God's people here, especially those who work in the service of the emperor.

²³ The grace of the Lord Jesus Christ be with you all.

फिलिप्पी मसीहियों के उपहार के लिए**पौलुस का धन्यवाद**

¹⁰ तुम निश्चय ही मेरी भलाई के लिये सोचा करते थे किन्तु तुम्हें उसे दिखाने का अवसर नहीं मिला था, किन्तु अब आखिरकार तुममें मेरे प्रति फिर से चिंता जागी है। इससे मैं प्रभु में बहुत आनन्दित हुआ हूँ। ¹¹ किसी आवश्यकता के कारण मैं यह नहीं कह रहा हूँ। क्योंकि जैसी भी परिस्थिति में मैं रहूँ, मैंने उसी में संतोष करना सीख लिया है। ¹² मैं अभावों के बीच रहने का रहस्य भी जानता हूँ और यह भी जानता हूँ कि सम्पन्नता में कैसे रहा जाता है। कैसा भी समय हो और कैसी भी परिस्थिति चाहे पेट भरा हो और चाहे भूखा, चाहे पास में बहुत कुछ हो और चाहे कुछ भी नहीं, मैंने उन सब में सुखी रहने का भेद सीख लिया है। ¹³ जो मुझे शक्ति देता है, उसके द्वारा मैं सभी परिस्थितियों का सामना कर सकता हूँ।

¹⁴ कुछ भी हो तुमने मेरे कष्टों में हाथ बटा कर अच्छा ही किया है। ¹⁵ हे फिलिपियों, तुम तो जानते ही हो, सुसमाचार के प्रचार के उन आरम्भिक दिनों में जब मैंने मकिदोनिया छोड़ा था, तो लेने-देने के विषय में केवलमात्र तुम्हारी कलीसिया को छोड़ कर किसी और कलीसिया ने मेरा हाथ नहीं बटाया था। ¹⁶ मैं जब थिस्सिलुनीके में था, मेरी आवश्यकताएँ पूरी करने के लिये तुमने बार बार मुझे सहायता भेजी थी। ¹⁷ ऐसा नहीं है कि मैं उपहारों का इच्छुक हूँ, बल्कि मैं तो यह चाहता हूँ कि तुम्हारे खाते में लाभ जुड़ता ही चला जाये। ¹⁸ तुमने इपफ्रोदीतुस के हाथों जो उपहार मधुर गंध भेंट के रूप में मेरे पास भेजे हैं वे एक ऐसा स्वीकार करने योग्य बलिदान है जिससे परमेश्वर प्रसन्न होता है। उन उपहारों के कारण मेरे पास मेरी आवश्यकता से कहीं अधिक हो गया है, मुझे पूरी तरह दिया गया है, बल्कि उससे भी अधिक भरपूर दिया गया है। वे वस्तुएँ मधुर गंध भेंट के रूप में हैं, एक ऐसा स्वीकार करने योग्य बलिदान जिससे परमेश्वर प्रसन्न होता है। ¹⁹ मेरा परमेश्वर तुम्हारी सभी आवश्यकताओं को मसीह यीशु में प्राप्त अपने भव्य धन से पूरा करेगा। ²⁰ हमारे परम पिता परमेश्वर की सदा सदा महिमा होती रहे। आमीन।

²¹ मसीह यीशु के हर एक संत को नमस्कार। मेरे साथ जो भाई हैं, तुम्हें नमस्कार करते हैं। ²² तुम्हें सभी संत और विशेष कर कैसर परिवार के लोग नमस्कार करते हैं।

²³ तुम में से हर एक पर हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह तुम्हारी आत्मा के साथ रहे।